(E - 106)
शांति प्रभुजीरे, विनति मोरी

(अेक सुख पाया मैंने, अंमाके राजमें–अे देशी)

शांति प्रभुजीरे, विनति मोरी माननाः (टेक)

आज मंगल पाया मैंने, प्रभुके दरबारमें (२);
शांतिनाथ सुखदायीरे, मंगल मेरा करनाः शांति प्रभु० १

आज सरन पाया मैंने, प्रभुके दरबारमें (२)
तरन-तारन बिरुदधारीरे, कल्याण मेरा करनाः शांति० २

आज सुख पाया मैंने, प्रभुके दरबारमें (२)
जगतारक प्रभु वडोरे, सेवक सुखी करनाः शांति० ३

आज शांति पाई मैंने, प्रभुके दरबारमें (२);
जिनराज निजानंदीरे, अनाथ मुझे तारनाः शांति० ४

आज भक्ति पाई मैंने, प्रभुके दरबारमें (२);
अरिहंत देवाधिदेवरे, दुःखोंको मेरे काटनाः शांति० ५

आज सेवा पाई मैंने, प्रभुके दरबारमें (२);
वीतराग लोकनाथरे, भवोंका फेरा टालनाः शांति० ६

आज दर्शन पाया मैंने, प्रभुके दरबारमें (२);
पूरण शशिसम प्रभु रे, सेवक शांति करना. शांति० ७